

# स्वास्थ्य देखभाल, शिक्षा और रोजगार में जाति, वर्ग और धर्म के आधार पर महिलाओं की स्थिति को समझने का एक अध्ययन

Garima Singh<sup>1\*</sup>, Dr. Bal Vidya Prakash<sup>2</sup>

<sup>1</sup> Research Scholar, Shri Krishna University, Chhatarpur, M.P.

<sup>2</sup> Associate Professor, Shri Krishna University, Chhatarpur, M.P.

*सार - यह अध्ययन महिलाओं की स्थिति को समझने के लिए जाति, वर्ग और धर्म के आधार पर स्वास्थ्य देखभाल, शिक्षा और रोजगार के क्षेत्रों में उनके प्रति प्रभाव की जांच करता है। यह अध्ययन विभिन्न सामाजिक सांकेतिक आधारों पर आधारित होता है जो महिलाओं की जीवन में परिपूर्णता और समानता को प्रभावित करते हैं, विभिन्न जातियों, वर्गों और धर्मों की महिलाओं के स्वास्थ्य देखभाल सेवाओं तक पहुँच की उपलब्धता और गुणवत्ता का विश्लेषण किया जाता है। इसके साथ ही, उन्हें उच्च शिक्षा की पहुँच, शिक्षा की स्तर, और विभिन्न रोजगार संबंधित विकल्पों की सुविधा की उपलब्धता का भी अध्ययन किया जाता है।*

**कीवर्ड :** महिलाओं, शिक्षा

-----X-----

## परिचय

इससे पहले कि हम लैंगिक मुद्दों से निपटें, यह स्थिति स्पष्ट करना महत्वपूर्ण है कि पुरुषों और महिलाओं के पास जन्म लेने का समान सुनहरा अवसर हो सकता है, लेकिन हमारे समाज में महिलाओं और पुरुषों के लिए उपलब्ध अवसर काफी भिन्न हैं। महिलाएं समान नहीं हैं वे उपलब्ध अवसर और विकल्पों के प्रयोग के मामले में भिन्न होती हैं। महिलाओं के बीच विभाजन हैं क्योंकि पुरुषों और महिलाओं के बीच मतभेद हैं। महिलाएं धर्म, जाति, नस्ल, वर्ग और जातीयता के आधार पर भिन्न होती हैं। एक विषम श्रेणी से एक समूह के रूप में महिलाएं, लेकिन साथ ही साथ कई समानताएं हैं जो उन्हें एक साथ बांधती हैं। जब हम समाज में संचालित पितृसत्ता की प्रकृति और सीमा की पहचान करते हैं और इसलिए, महिलाओं के सामान्य दिन-प्रतिदिन के अनुभव की पहचान करते हैं, तो भेद दूर हो जाते हैं। महिलाओं को जिन समस्याओं और मुद्दों का सामना करना पड़ रहा है, वे निजी और सार्वजनिक स्थानों पर सभी के लिए समान हैं, 1970 के दशक से, जब भी हमें महिलाओं के मुद्दे पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता होती है, तो 'लिंग' शब्द आम हो गया है। सदियों से, जैविक अंतर पुरुष और महिला के लिए अलग-अलग सामाजिक भूमिकाएं बनाने

के औचित्य का आधार रहा है। समाज में उनकी घरेलू भूमिका निर्धारित करने के लिए महिलाओं की प्रसव क्षमता, स्तनपान और अपेक्षाकृत कमजोर शारीरिक क्षमता देखी गई। जैविक असमानता ने भी उन्हें सार्वजनिक जीवन में सक्रिय भागीदारी लेने के लिए अनुपयुक्त बना दिया। महिलाओं को पुरुषों की तुलना में कम संगत के रूप में लिया जाता है, जो भावनाओं से अधिक शासित होती हैं, इस प्रकार निर्णय लेने में असंगत होती हैं। 'कोई पैदा नहीं होता, बल्कि एक औरत बन जाता है। महिलाओं की हीन स्थिति जैविक या प्राकृतिक नहीं है; वास्तव में लेकिन एक जो समाज द्वारा विकसित किया गया है। इसके विपरीत, कोई मानव जाति की बेटों के रूप में जन्म ले सकता है लेकिन यह सभ्यता है जिसने महिलाओं को जन्म दिया है, जो 'स्त्री' की परिभाषा देती है और महिलाओं के व्यवहार के तरीके को निर्धारित करती है। और महिलाओं के इस निर्माण का मतलब था कि उनके साथ दुर्व्यवहार जारी रहा। व्यवहार का तरीका और सामाजिक भूमिकाएँ जो सभ्यता ने महिलाओं को पुरुषों की तुलना में खुद को हीन स्थिति मानने के लिए सौंपी हैं।

महिलाओं की स्थिति दर्शाती है कि कैसे दशकों से शक्तिशाली द्वारा महिला का निर्माण किया गया है। महिलाओं की स्थिति को किसी भी समाज में प्रचलित भेदभाव और असमानताओं के संबंध में समझा जाना चाहिए। (नांदल विकास, (2013)) लिंगानुपात की दृष्टि से देखें तो भारत की लगभग आधी आबादी महिलाओं की है, लेकिन लगातार अलग-अलग समय में उन्हें 'गंभीर स्थिति' का सामना करना पड़ा है। समाज के विभिन्न स्तरों में महिलाओं के खिलाफ सामाजिक-सांस्कृतिक प्रथाओं और धार्मिक पूर्वाग्रहों के नाम पर उसे एक लंबी अवधि के बाद से जानबूझकर वृद्धि और विकास के अवसरों से वंचित रखा गया है। देश में पितृसत्तात्मक समाज होने के कारण जीवन के लगभग हर क्षेत्र में पुरुषों के वर्चस्व से महिलाएं अपने अधिकार से वंचित हैं; विशेष रूप से जीवन के आर्थिक क्षेत्र में, और घर में महत्वपूर्ण आर्थिक और सामाजिक मामलों पर निर्णय लेने के मामले में।

देश में महिलाओं की स्थिति जो पिछले कुछ सहस्राब्दी में काफी परिवर्तन के अधीन रही है, प्राचीन से मध्यकाल तक उनकी स्थिति में काफी हद तक गिरावट आई है। पहले के समय में देश में महिलाओं की स्थिति व्यावहारिक जीवन में पुरुषों से हीन रही है। हालाँकि, वे शास्त्रों में उच्च स्थिति का आनंद लेते थे। प्राचीन भारत में, महिलाओं को उनके समकक्ष पुरुषों के समान समान अधिकार और स्थिति का आनंद मिलता था। वे प्रारंभिक वैदिक काल में उच्च स्तर की शिक्षा का आनंद लेते थे। स्त्रियों को अपना जीवन-साथी चुनने की पर्याप्त स्वतंत्रता थी, वास्तव में इस काल में स्त्री पुरुषों की अपेक्षा बेहतर स्थिति का उपभोग करती थी। मध्ययुगीन काल में मुसलमानों के आगमन के साथ भारत में महिलाओं की स्थिति सबसे खराब हो गई थी। इस अवधि के दौरान सती प्रथा, कन्या भ्रूण हत्या और बाल विवाह जैसी कई सामाजिक बुराइयाँ प्रचलित थीं।

### साहित्य की समीक्षा

राव (2015) ने अपने पेपर में "अनौपचारिक श्रम बाजार में महिलाओं की आजीविका की अनिश्चितता; दिल्ली एनसीआर से अनुभवजन्य साक्ष्य" ने दैनिक श्रम बाजार के साथ महिलाओं की बातचीत के बारे में अध्ययन किया। यह पाया गया कि अनौपचारिक क्षेत्र में महिलाओं के काम करने की न केवल बहुत अधिक संभावना है, बल्कि वे अनौपचारिक श्रम बाजार के निचले स्तर पर अलग होने की प्रवृत्ति भी रखती हैं, जो कम कमाई और गरीबी के उच्च जोखिम की विशेषता है। गुरुग्राम में स्थानीय प्रशासन के अनुसार लगभग 10000 स्ट्रीट वेंडर हैं, जिनमें 50 प्रतिशत से

अधिक महिला नियमित वेतन भोगी घरेलू नौकर हैं। गुरुग्राम में 20,000 से अधिक घरेलू नौकर हैं, जिनमें अधिकांश उत्तरदाता महिलाएं थीं। निर्माण स्थल पर कार्य लैंगिक रूप से अलग-अलग होते हैं, जिनमें महिलाएं कम कुशल भारी सामान ले जाने का काम करती हैं; इसलिए महिलाओं की मजदूरी पुरुषों की तुलना में कम है।

अहलावत (2016) ने अपने अध्ययन में 'डार्क साइड ऑफ द मैरिज स्क्वीज, वायलेंस अगैस्ट क्रॉस-रीजन ब्राइड्स इन हरियाणा, अध्ययन हरियाणा के 8 गांवों - जींद जिले में बिशनपुरा, किशनपुरा, बीबीपुर; जिला रोहतक में दोभ, भाली और बालंद; हिसार जिले से मोहला और समनपुथी। अध्ययन से पता चला कि विषम लिंगानुपात से प्रेरित दुल्हन की कमी के परिणामस्वरूप दूर-दराज के राज्यों से हरियाणा में लाई गई दुल्हनों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। क्रॉस-रीजन ब्राइड्स के अनुभव बेहद विविध हैं। हालाँकि सभी क्रॉस-रीजन दुल्हनों को हिंसा का सामना नहीं करना पड़ा, लेकिन एक बड़ी संख्या, यानी इन महिलाओं में से 30 प्रतिशत, किसी न किसी रूप में घरेलू हिंसा की शिकार थीं। जन्म लेने वाले बच्चों की स्वीकृति और उपचार भी अलग-अलग होते हैं; तीव्र हिंसा की शिकार इन महिलाओं के बच्चों के साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया गया।

परवेज़ (2016) ने अपने पेपर "अंडरस्टैंडिंग पॉलिसी एंड प्रोग्राम्स ऑन सेक्स सेलेक्शन इन तमिलनाडु" में, यह अध्ययन दो ऐसी योजनाओं से संबंधित है: "द क्रेडल बेबी स्कीम (CBS) और गर्ल चाइल्ड प्रोटेक्शन स्कीम (GCPS), जो कि राज्य में बालिकाओं को 'बचाओ' और 'बचाओ'। सीबीएस और जीसीपीएस का अध्ययन न केवल तमिलनाडु सरकार की समझ के भीतर अंतर्विरोधों को उजागर करता है कि कैसे कन्या भ्रूण हत्या और पुत्र वरीयता संचालित होती है, बल्कि इस तरह के हस्तक्षेप के पीछे की राजनीति को भी स्पष्ट करता है, जो जनसंख्या नियंत्रण के एक कार्यक्रम को लागू करने की आवश्यकता है। एक ओर, सरकार दहेज, दहेज, गरीबी और प्रजनन और जनसांख्यिकीय परिवर्तन की समस्या में निहित कन्या भ्रूण हत्या और शिशु हत्या की समझ को आगे बढ़ाने का दावा करती है। इसके विपरीत, इसके निवारक उपाय लोगों की लिंग चयन प्रवृत्ति के कारणों को पुष्ट करते हैं। अंतिम परिणाम एक पुलिसिंग दृष्टिकोण के माध्यम से शिशुहत्या पर नियंत्रण है, जबकि गर्भपात के लिए सेक्स चयनात्मक दृष्टिकोण के कथित कारणों में वृद्धि होती है; और सरकार के पास इन समस्याग्रस्त

क्षेत्रों से निपटने के लिए एक उपयुक्त रणनीति का अभाव है।

**कौर (2017)** ने पंजाब में धर्म, जाति, वर्ग और लैंगिक असमानता के खिलाफ निंदा करते हुए ऑनर किलिंग की बढ़ती घटना पर पर्याप्त प्रकाश डाला है। अपराध की गंभीरता को उजागर करने के लिए, उसने 'कारण-प्रभाव संबंध' स्थापित करने की कोशिश की है और अपने अध्ययन से निष्कर्ष निकाले हैं। यह एक अनुभवजन्य अध्ययन है, जो कुछ गुणात्मक मापदंडों पर आधारित है; जो पंजाब में ऑनर किलिंग के लिए जिम्मेदार साबित हुए हैं। इसके अलावा, किए गए अध्ययन के मात्रात्मक विश्लेषण से पता चलता है कि हालांकि ऑनर किलिंग को लिंग विशिष्ट अपराध के रूप में लिया जाता है, चाहे पीड़ित पुरुष और महिला हों, कोई सेक्स बार नहीं है। इसके अलावा, निष्कर्षों में पाया गया कि अधिकांश "ऑनर किलिंग" उच्च जाति के जाट सिख परिवारों में हुई हैं। इस संबंध में लड़की के परिवार की स्थिति बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सामाजिक-आर्थिक मतभेद अक्सर इस अपराध की ओर ले जाते हैं; पंजाब में "ऑनर किलिंग" वर्ग या वर्गों में लैंगिक असमानता में परिणाम की स्थिति का दावा और रखरखाव है। पंजाब राज्य में ऑनर किलिंग; जाति और वर्ग असमानता को प्रकट करना समाज में लिंग असमानता के रूप को प्रकट करना।

**चौहान एट अल। (2018)** अपने अध्ययन में "घरेलू हिंसा और दक्षिणी भारत के एक ग्रामीण क्षेत्र में विवाहित महिलाओं के बीच संबंधित कारक" अध्ययन में कभी विवाहित महिलाओं के खिलाफ घरेलू हिंसा के प्रसार, विभिन्न रूपों और संबद्ध कारकों को जानने के लिए जांच की गई थी; 15-49 वर्ष के आयु-समूह के भीतर थे। यह अध्ययन ग्रामीण हैदराबाद में मल्ला रेड्डी इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज में आयोजित किया गया था। अध्ययन पार-अनुभागीय अध्ययन और समुदाय आधारित था। इसमें विवाहित, तलाकशुदा, अलग रह रहे और विधवा शामिल थे। उन विधवाओं को बाहर रखा गया जिनके पति की मृत्यु 5 वर्ष से अधिक समय पहले हो गई थी क्योंकि वे अपने अतीत से संबंधित प्रश्नों से बचती हैं। साधारण यादृच्छिक प्रतिचयन का प्रयोग किया गया। मौखिक सहमति भी ली गई। प्रत्येक प्रतिभागी बेझिझक प्रतिक्रिया दे रहा था क्योंकि उनकी प्रतिक्रिया उनके करीबी लोगों को नहीं बताई जाएगी। उनके रहने की व्यवस्था, उनके पति के साथ संबंध और किसी भी हिंसा के इतिहास से संबंधित एक प्रश्नावली का उपयोग किया गया था जो कि उनके पति से अतीत में शारीरिक या यौन हो सकती है। अध्ययन के दौरान पाया

गया कि 33.5 प्रतिशत महिलाएं किसी भी प्रकार की हिंसा का शिकार हुईं और 29.4 प्रतिशत ने कम से कम एक बार शारीरिक हिंसा का अनुभव किया। अध्ययन से पता चलता है कि घरेलू हिंसा एक सार्वभौमिक घटना है और यह पृथ्वी के हर कोने में मौजूद है। घरेलू हिंसा से संबंधित कारक जैसे शराब का उपयोग, महिला साक्षरता का स्तर, महिलाओं की आर्थिक स्थिति और सबसे महत्वपूर्ण दृष्टिकोण जो एक पति को अपनी पत्नी को मारने या अपमान करने का अधिकार है। अध्ययन की सिफारिश की गई ताकि शराब के दुरुपयोग की प्रबलता को कम किया जा सके।

**छाबड़ा (2018)** ने इस पत्र "महिलाओं के स्वास्थ्य पर सामाजिक हिंसा के प्रभाव" में महिलाओं के स्वास्थ्य पर घरेलू हिंसा के बोझ की जांच की है। लगभग 20% महिलाएं गर्भावस्था के समय भी घरेलू हिंसा का शिकार हुई हैं। घरेलू हिंसा के प्रमुख कारण थे: कम उम्र में शादी, बेरोजगारी, गरीबी, शराब की लत और भारी आर्थिक और सामाजिक परिवर्तन। घरेलू हिंसा के अलावा वित्तीय हिंसा भी मौजूद है। आत्महत्या जैसे मनोवैज्ञानिक परिणाम बताए गए हैं। हिंसा ने महिलाओं के समग्र कल्याण को कई तरह से प्रभावित किया है।

**नेसन एट अल। (2018)** "महिलाओं के बीच घरेलू हिंसा के पैटर्न" महिलाओं के बीच घरेलू हिंसा के पैटर्न की जांच करने के लिए उनके पेपर "घरेलू हिंसा पैटर्न और ग्रामीण मैंगलोर में विवाहित महिलाओं के बीच इसके परिणाम" में जनवरी से कर्नाटक के मैंगलोर में तृतीयक देखभाल अस्पताल में विवाहित महिलाओं के बीच एक क्रॉस-सेक्शनल अध्ययन किया गया था। 2017. अध्ययन में 199 ग्रामीण महिलाओं को शामिल किया गया। 83.1% महिलाओं ने भावनात्मक हिंसा की सूचना दी, 53.8 प्रतिशत महिलाओं ने शारीरिक हिंसा की सूचना दी और साथ ही 21.1 प्रतिशत महिलाओं ने यौन हिंसा की सूचना दी। यह स्थापित किया गया था कि घर पर अपमानजनक व्यवहार का सह-अपराधियों की आयु, सह-अपराधियों के वेतन और उनके निर्णय लेने के साथ संबंध था। 58.8 प्रतिशत महिलाओं ने घर में अपमानजनक व्यवहार का अनुभव किया। घर में आक्रामक व्यवहार की सामान्यता अधिक थी और निर्भरता इसका वास्तविक स्वास्थ्य परिणाम था।

**नाथन, वी.ए. रमेश और थोरात विमल (2020)** "यूपी में दलित लड़कियों और महिलाओं के खिलाफ अत्याचार"। दलित महिला व बालिकाओं पर अत्याचार के मामले का हवाला देकर उत्तर प्रदेश की बिगड़ती कानून व्यवस्था पर

पर्याप्त प्रकाश डाला है। वे लेखक अपने अधिकारों और सुरक्षा को अपलोड करना चाहते हैं; उत्तर प्रदेश के हाथरस में नृशंस हत्या और सामूहिक बलात्कार। पीड़िता के शव को पुलिस ने परिजनों की मर्जी के खिलाफ जला दिया था। यह बिल्कुल स्पष्ट है कि राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) द्वारा रिपोर्ट की गई कानून और व्यवस्था की स्थिति; 2018-19 का। पुलिस द्वारा मृतक के पीड़ित परिवार को सुरक्षा एवं संरक्षा प्रदान करने के लिए सेवाओं को सुविधाजनक बनाने के लिए कोई सतत प्रयास नहीं किया गया था। कुछ स्वैच्छिक संगठन थे; प्रभावी कार्यकारी उपाय करने की मांग की ताकि उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों में इस प्रकार की स्थिति से प्रभावी तरीके से निपटा जा सके।

### कार्यप्रणाली

उपस्थिति अध्ययन में, सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षिक और आर्थिक संदर्भों में महिलाओं की बदलती स्थिति के संदर्भ में महिलाओं की स्थिति को समझने के लिए एक खोजपूर्ण शोध डिजाइन का उपयोग किया गया था। इस घटना को समझने के लिए क्षेत्र से डेटा एकत्र किया गया, जिसमें ग्रामीण क्षेत्र भी शामिल हैं। गाँवों से डेटा एकत्र किया गया और महिलाओं से संबंधित कई नए तथ्य सामने आए।

### नमूना

ग्रामीण पन्ना जिले में महिलाओं की स्थिति का अध्ययन करने के लिए, हम वर्तमान अध्ययन के लिए घर को इकाई मानेंगे। उपस्थिति अध्ययन में हम उच्च एवं निम्न महिला साक्षरता दर एवं लिंगानुपात को ध्यान में रखते हुए जिले का चयन करेंगे। प्रत्येक जिले से एक ब्लॉक और प्रत्येक ब्लॉक से दो गाँवों का चयन लॉटरी पद्धति से किया जाएगा। हम प्राथमिक डेटा एकत्र करने के लिए कोटा नमूनाकरण लागू करेंगे क्योंकि प्रत्येक गाँव में परिवारों की कुल संख्या विभिन्न जातियों से होगी। दूसरे, हम उत्तरदाताओं के गहन अध्ययन के लिए कोटा नमूनाकरण भी अपनाएंगे। कुल मिलाकर कोटा नमूना समूहों में प्रत्येक गाँव से 120 उत्तरदाता शामिल हैं और अध्ययन में उत्तरदाताओं के रूप में केवल विवाहित महिलाएं शामिल हैं। चार गाँवों के अध्ययन नमूने का आकार 480 उत्तरदाताओं का है।

### डेटा विश्लेषण

#### उत्तरदाताओं का सामाजिक आर्थिक प्रोफाइल

यह अध्ययन उत्तरदाताओं की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि से संबंधित है। यहां यह उल्लेख करने की आवश्यकता नहीं

है कि महिलाओं की स्थिति से जुड़े सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक और राजनीतिक आयामों की जांच के लिए महिला की स्थिति का व्यापक मूल्यांकन आवश्यक है। इसलिए, उत्तरदाताओं की सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि के बारे में क्षेत्र से विस्तृत जानकारी एकत्र की गई। हम उत्तरदाताओं की आयु, जाति, घरेलू आय, शैक्षिक स्तर, उत्तरदाताओं का व्यवसाय, बच्चों की संख्या, विवाह की आयु, आर्थिक निर्भरता, निर्णय लेने के बारे में उत्तरदाताओं की राय, वेतन अंतर, उपचार का स्थान, महिलाओं के सामने आने वाली समस्या आदि का विश्लेषण करते हैं।

### आयु :

उत्तरदाताओं की वर्तमान आयु आयु अंतराल को दर्शाने वाला एक महत्वपूर्ण जनसांख्यिकीय चर है। यह दर्शाता है कि जनसंख्या युवा, मध्यम आयु या वृद्ध है या नहीं, जो परिवार के साथ-साथ समाज में उनके योगदान को दर्शाता है।

तालिका: 1.1 उत्तरदाताओं की आयु

आयु	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
20-30	108	22.50
31-40	180	37.50
41-50	100	20.84
50 से ऊपर	92	19.16
कुल	480	100.00

तालिका उत्तरदाताओं की आयु दर्शाती है। 37.50 प्रतिशत उत्तरदाता 31 से 40 वर्ष के आयु वर्ग के थे, 22.50% उत्तरदाता 20 से 30 वर्ष के आयु वर्ग के थे। 20.84 प्रतिशत उत्तरदाता 41 से 50 वर्ष के आयु वर्ग के थे और 19.16 प्रतिशत उत्तरदाता 50 वर्ष से अधिक आयु वर्ग के थे। डेटा से पता चलता है कि अधिकांश उत्तरदाता 31 से 40 वर्ष के आयु वर्ग के थे।

### जाति:

भारतीय समाज में जाति व्यक्तियों की स्थिति निर्धारित करने वाला एक महत्वपूर्ण आयाम है। ग्रामीण समाज में, जाति ने न केवल सामाजिक और सांस्कृतिक प्रतिष्ठा को बल्कि समाज में आर्थिक स्थिति को भी प्रभावित किया।

तालिका 1.2 उत्तरदाताओं की जाति

जाति	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
सामान्य	256	53.33
अन्य पिछड़ा वर्ग	108	22.5
अनुसूचित जाति	87	18.13
अन्य जाति	29	6.04
कुल	480	100.00

तालिका उत्तरदाताओं की जाति दर्शाती है। सर्वाधिक उत्तरदाता सामान्य जाति से थे जो कि 53.33 प्रतिशत है। 22.5 प्रतिशत उत्तरदाता अन्य पिछड़ा वर्ग से थे, 18.13 प्रतिशत उत्तरदाता अनुसूचित जाति से थे और 6.04 प्रतिशत उत्तरदाता अन्य जाति से थे। आंकड़ों से पता चलता है कि अधिकांश उत्तरदाता सामान्य जाति के थे।

#### शिक्षा:

शिक्षा का स्तर किसी की स्थिति के साथ-साथ समाज में लोगों के जीवन की गुणवत्ता को भी दर्शाता है। यह एक महत्वपूर्ण संकेतक है और इसका पूरे जीवन पर समग्र प्रभाव पड़ता है।

तालिका 1.3 उत्तरदाताओं का शिक्षा स्तर

योग्यता	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
निरक्षर	63	13.12
प्राइमरी तक	97	20.21
माध्यमिक	109	22.71
उच्च माध्यमिक	99	20.63
स्नातक	77	16.04
स्नातकोत्तर	35	7.29
कुल	480	100.00

तालिका उत्तरदाताओं का शिक्षा स्तर दर्शाती है। नमूने के 22.71 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माध्यमिक कक्षा तक शिक्षा प्राप्त की। 20.63 उत्तरदाताओं की योग्यता उच्चतर माध्यमिक थी और 20.21 प्रतिशत ने प्राथमिक कक्षा तक पढ़ाई की थी। 16.04 प्रतिशत उत्तरदाता स्नातक थे और 13.12 प्रतिशत उत्तरदाता निरक्षर थे। केवल 7.29 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास स्नातकोत्तर तक की उच्च योग्यता थी। आंकड़ों से पता चलता है कि उच्च शिक्षा में महिलाओं का प्रतिशत कम है।

#### निष्कर्ष

भारतीय संदर्भ में महिलाओं की स्थिति को असमानता के लैंगिक आधार का अध्ययन किए बिना नहीं समझा जा

सकता है। समाज में महिलाओं को उनकी विविध भूमिकाओं के प्रदर्शन में प्रभावित करने वाली बाधाओं और अक्षमताओं की प्रकृति को समझने के लिए, सामाजिक-आर्थिक आयाम एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। "ग्रामीण पन्ना में महिलाओं की स्थिति : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन" शीर्षक वाला वर्तमान अध्ययन ग्रामीण समाज में महिलाओं की स्थिति की जांच करने के लिए पन्ना जिले में आयोजित किया गया है। 480 उत्तरदाताओं का एक नमूना; वर्तमान अध्ययन के लिए विभिन्न समुदायों से संबंधित लोगों को लिया गया। वर्तमान अध्ययन में ग्रामीण पन्ना में महिलाओं की सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षिक और आर्थिक स्थिति का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है। इन घटनाओं को समझने के लिए हमने निम्नलिखित उद्देश्य तैयार किए हैं (1) उत्तरदाताओं की सामाजिक-आर्थिक प्रोफाइल का अध्ययन करना। (2) स्वास्थ्य देखभाल, शिक्षा और रोजगार में जाति, वर्ग और धर्म के पार महिलाओं की स्थिति को समझना। (3) परिवार में सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षिक एवं आर्थिक जीवन में निर्णय लेने के स्तर का अध्ययन करना। (4) महिलाओं के खिलाफ हिंसा की घटनाओं की जांच करना। (5) महिलाओं की स्थिति को ऊपर उठाने के लिए सरकारी कार्यक्रमों के प्रभाव का अध्ययन करना। सबसे पहले हमने उत्तरदाताओं की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि का विश्लेषण किया है। 480 उत्तरदाताओं में से 256 उत्तरदाता सामान्य जाति के थे, 108 उत्तरदाता अन्य पिछड़ा वर्ग के थे, 87 उत्तरदाता अनुसूचित जाति के थे और 29 उत्तरदाता अन्य जाति के थे। 37.50 प्रतिशत उत्तरदाता 31 से 40 वर्ष के आयु वर्ग के थे, 22.50% उत्तरदाता 20 से 30 वर्ष के आयु वर्ग के थे। नमूने के 22.71 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माध्यमिक कक्षा तक शिक्षा प्राप्त की, 16.04 प्रतिशत उत्तरदाता स्नातक थे और 7.29 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने उच्चतर शिक्षा प्राप्त की थी।

#### संदर्भ

1. पटेल, तुलसी (2007). भारत में लिंग चयनात्मक गर्भपात: लिंग, समाज और नई प्रजनन तकनीकें। सेज प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. ओमेन, टीके (2000)। भारतीय समाज को समझना: नीचे से परिप्रेक्ष्य की प्रासंगिकता। समसामयिक पेपर सीरीज-4, डॉस, पुणे विश्वविद्यालय, पुणे (पी-12)।
3. नांदल विकास, (2013)। पंचायत राज संस्थान में महिलाओं की भागीदारी: हरियाणा की एक केस

स्टडी। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल साइंसेज, वॉल्यूम 2

4. राव, बलराम (2015)। अनौपचारिक श्रम बाजार में महिलाओं की आजीविका की अनिश्चितता: दिल्ली एनसीआर से अनुभवजन्य साक्ष्य। महिला लिंग वॉल्यूम। 21 नंबर 1, जनवरी मार्च 2015।
5. अहलावत, नीरजा (संपा) (2016)। लैंगिक भेदभाव और विकास विरोधाभास, बेटियों को खत्म करना और बेटों का चयन: योजना परिवार। रावत प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. परवेज़, शाहिद (2016)। तमिलनाडु में सेक्स चयन पर नीति और प्रोग्रामिंग को समझना। (एड.इन) रवींद्र कौर द्वारा बहुत सारे पुरुष, बहुत कम महिलाएं। ओरिएंट ब्लैक स्वान प्रकाशन, नई दिल्ली
7. कौर, किरणजीत (2017)। वर्ग, जाति और लैंगिक असमानता के संदर्भ में ऑनर किलिंग: पंजाब का एक केस स्टडी। गुरु नानक जर्नल ऑफ सोशियोलॉजी, वॉल्यूम 33 नंबर 1 और 2।
8. चौहान, पूजा, श्रीदेवी, कोटिना और कटकुरी, सुषमा (2018)। दक्षिण भारत के एक ग्रामीण क्षेत्र में कभी विवाहित महिलाओं के बीच घरेलू हिंसा और संबंधित कारक। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ कम्युनिटी मेडिसिन एंड पब्लिक हेल्थ, खंड 5(9) पृष्ठ: 3847-3852।
9. छाबड़ा, एस (2018)। महिलाओं के स्वास्थ्य पर सामाजिक/घरेलू हिंसा का प्रभाव। महिला स्वास्थ्य और प्रजनन चिकित्सा, खंड 2। संख्या 1:6 पृष्ठ 1-7।
10. नेसन, शाइनी क्रिस्म क्वीन, मैया, गुंडमी राकेश और कुंडापुर, रश्मी (2018)। ग्रामीण मैंगलोर में विवाहित महिलाओं के बीच घरेलू हिंसा पैटर्न और इसके परिणाम। इंडियन जर्नल ऑफ कम्युनिटी हेल्थ वॉल्यूम। 30, अंक संख्या 02 पृष्ठ: 170-174।

### Corresponding Author

**Garima Singh\***

Research Scholar, Shri Krishna University, Chhatarpur, M.P.